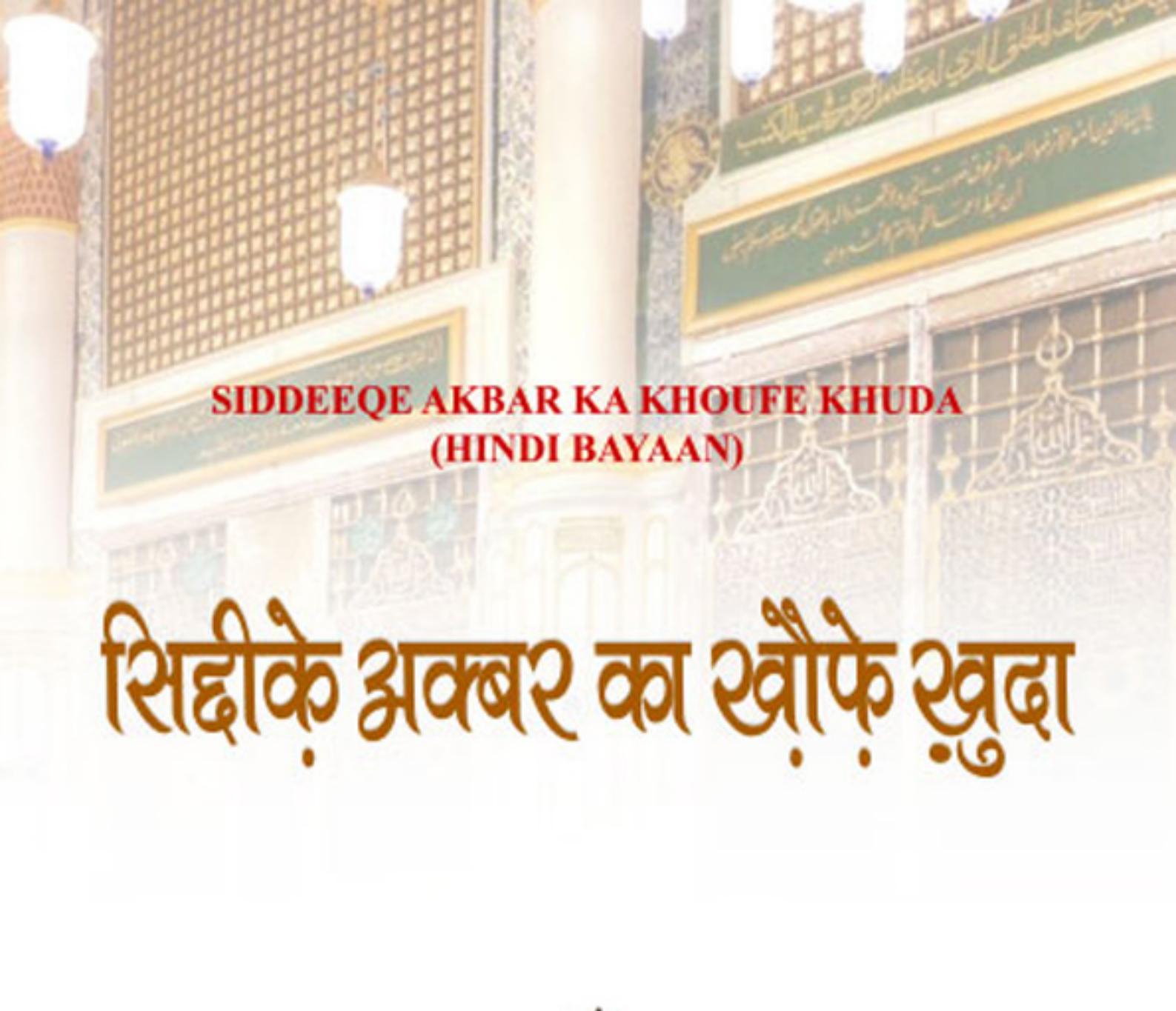

SIDDEEQE AKBAR KA KHOUFE KHUDA
(HINDI BAYAAN)

सिद्दीक़े अक्बर का ख़ौफ़े ख़ुदा

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना-पीना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह़ो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी।

(الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، الترغیب فی آیات واذکار...الخ، ۱/۳۱۲، حدیث: ۹۹۱)

चारए बे चारगां पर हों दुरूदे सद हज़ार *बे कसों के ह़ामी व ग़मख़्वार पर लाखों सलाम*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** "نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ، اُذْکُرُوا اللّٰہ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ❁ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ❁ देख कर बयान करूंगा ❁ पारह 14, सूरतुन्नह्ल, आयत 125 :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱) में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ❁ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ❁ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा (या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा) ❁ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ❁ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ❁ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरैश का ख़ुश नसीब जवान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिअ़्सते नबवी से क़ब्ल दीगर अहले अ़रब की त़रह़ अहले मक्का भी कुफ़्रो शिर्क, ज़ुल्मो सितम, वह़शत व बरबरिय्यत, बदकारी व शराब नोशी और इन जैसे कई दीगर गुनाहों में घिरे हुवे थे, हर त़रफ़ जहालत का राज था और लोग राहे हिदायत से भटक चुके थे। मगर उस वक़्त भी चन्द एक ऐसे लोग थे जो इन तमाम गुनाहों से न सिर्फ़ बेज़ार थे बल्कि ह़क़ की तलाश में सरगर्दा भी रहते, उन्हीं लोगों में एक ऐसा शख़्स भी था जिस का शुमार क़ुरैश के शुरफ़ा और सरदारों में होता था और उस की नेक नामी की वजह से छोटे बड़े सब ही उस की इ़ज़्ज़त किया करते थे, बिल आख़िर एक रोज़ उस के साथ ऐसा वाक़िआ़ पेश आया जिस ने उस की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब बरपा कर दिया और जिस ह़क़ की तलाश में वोह सरगर्दा था वोह ह़क़ उसे मिल गया। आइये क़ुरैश के उस अ़ज़ीम शख़्स के साथ पेश आने वाले वाक़िए़ को उसी की ज़बानी सुनते हैं चुनान्चे, वोह कहते हैं कि :

मैं किसी अहम काम से यमन गया, वहां एक बुड्ढे आ़लिम से मुलाक़ात हो गई, उस ने मुझे देख कर कहा : "मेरा गुमान है कि तुम ह़रम (या'नी मक्कए मुकर्रमा) के रहने वाले हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं अहले ह़रम से ही हूं।" उस ने कहा : "तुम क़ुरैश से हो ?" मैं ने कहा : जी हां मैं क़ुरैशी हूं।" उस ने फिर कहा : तुम तैमी भी हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं तैम बिन मुर्रह की अवलाद से हूं। उस ने कहा : "सारी निशानियां दुरुस्त हैं, बस अब तुम में एक निशानी देखना बाक़ी रह गई है।" मैं ने कहा : "वोह क्या ?" उस ने कहा : "अपना पेट दिखाओ।" मैं ने कहा : "नहीं ! पहले मुझे सारी बात बताओ, फिर मैं दिखाऊंगा।" उस ने कहा : "मैं अपने सह़ीह़ और सादिक़ इ़ल्म के ज़रीए़ जानता हूं कि ह़रम में एक नबी मबऊ़स होगा और दो शख़्स उस नबी की मदद करेंगे। उन में से एक शख़्स मुहिम्मात को सर करने (जंगें फ़त्ह़ करने) और मुश्किलात को ह़ल करने वाला होगा और दूसरा शख़्स सफ़ेद रंग का नह़ीफ़ व कमज़ोर होगा और उस के पेट पर तिल होगा, उस की उलटी रान पर एक अ़लामत होगी।" जैसे ही मैं ने पेट से कपड़ा हटाया तो उस ने

मेरी नाफ़ के उपर मौजूद सियाह रंग का तिल देख कर कहा : ''रब्बे का'बा جَلَّ جَلَالُہٗ की क़सम ! तुम वोही हो, मैं तुम्हारे पास ख़ुद आने वाला था।'' मैं ने कहा : ''किस लिये ?'' उस ने कहा : ''येह बताने के लिये कि तुम राहे हिदायत से न हटना और **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें जो ने'मत अ़ता की है, उस के मुआ़मले में डरते रहना।'' जब मैं उस से रुख़्सत होने लगा तो उस ने कहा : ''मेरे कुछ शे'र सुनते जाओ जो मैं ने उस (अ़न क़रीब मबऊ़स होने वाले) नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में कहे हैं।'' फिर उस ने मुझे कुछ अ़श्आ़र सुनाए।

जब मैं वापस मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंचा तो मेरे वाक़िफ़े कार चन्द सरदाराने क़ुरैश उ़क़बा बिन अबी मुऐ़त, शैबा, रबीआ़, अबू जह्ल, अबुल बख़्तरी वग़ैरा मिले, उन्हों ने कहा : ''तुम यमन गए हुवे थे यहां एक अ़ज़ीम वाक़िआ़ हो गया है। अबू त़ालिब के भतीजे ने येह दा'वा किया है की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नबी है, अगर तुम न होते तो हम इस मुआ़मले में इन्तिज़ार न करते और ख़ुद ही कोई न कोई फ़ैसला कर लेते, लेकिन अब तुम आ गए हो तो इस का फ़ैसला करना तुम पर मौक़ूफ़ है ?'' मैं ने उन की बात सुन कर उन्हें अह्सन त़रीक़े से वापस किया और फिर (ह़ज़रत) मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया। मा'लूम हुवा कि वोह (ह़ज़रत) ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर हैं, मैं ने दरवाज़ा खट खटाया तो वोह बाहर आए, मैं ने अ़र्ज़ की : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने अपने आबा व अजदाद का दीन क्यूं छोड़ दिया ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बेशक मैं तुम्हारी और दीगर तमाम लोगों की तरफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान ले आओ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''आप की नबुव्वत की क्या दलील है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''मेरी नबुव्वत की दलील वोह बुढ्ढा शख़्स है, जिस से तुम यमन में मिले थे।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मैं तो वहां कई बुढ्ढों से मिला हूं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''नहीं ! मैं उस बुढ्ढे की बात कर रहा हूं, जिस ने तुम्हें कुछ अश्आ़र भी सुनाए थे।'' मैं ने (ख़ुश हो कर फ़र्ते महब्बत से) कहा : ''ऐ मेरे महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को इस बात की ख़बर किस ने दी ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मुझे उस मुअ़ज़्ज़म फ़िरिश्ते ने ख़बर दी है, जो मुझ से पहले आने वाले अम्बिया के पास भी आया करता था।'' बस येह सुनते ही मैं ह़ैरान व शशदर रह गया कि वाक़ेई इस बात का तो मेरे इलावा किसी को भी इल्म नहीं था, यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं। मैं ने फ़ौरन कहा : ''मैं गवाही देता हूं की बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाईक़ नहीं और बेशक आप, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं।'' फिर मैं थोड़ी देर वहां बैठ कर वापस आ गया और मेरे इस्लाम लाने पर पूरी वादी में ख़ातमुल मुर्रसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई ख़ुश नहीं था। (اسد الغابہ، باب العین، عبداللہ بن عثمان ابو بکر الصدیق، اسلامہ، ۳/۳۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाला क़ुरैश का येह ख़ुश नसीब शख़्स कोई और नहीं बल्कि **ख़लीफ़ए अव्वल, आ़शिक़े अक्बर, यारे ग़ार, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आइये ! आ़लमे इस्लाम की इस अ़ज़ीम शख़्सिय्यत के बारे में मज़ीद सुनने से पहले आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अत्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की लिखी हुई मन्क़बत के चन्द अश्आ़र पढ़ते सुनते हैं।

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं — हक़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं — तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं
जो यारे ग़ारे महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं — वोही यारे मज़ारे मुस्त़फ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं
अमीरुल मोअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप — नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं
उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मां से भी हैं आ'ला — यक़ीनन पेश्वाए मुर्तज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं
इमाम अह़मद व मालिक, इमामे बू ह़नीफ़ा और — इमामे शाफ़ेई के पेश्वा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तमामी औलिया उल्लाह के सरदार हैं जो उस — हमारे ग़ौस के भी पेश्वा सिद्दीक़े अक्बर हैं
सभी उ़लमाए उम्मत के, इमाम व पेश्वा हैं आप — बिला शक पेश्वाए अस्फ़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं
न डर 'अ़त्तार' आफ़त से ख़ुदा की ख़ास रह़मत से — नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम, कुन्यत और अल्क़ाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम अ़ब्दुल्लाह और वालिद का नाम (अबू क़ह़ाफ़ा) उ़स्मान है।

(صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ صلی اللہ علیہ وسلم عن مناقب الصحابہ، ذکر السبب الذی من اجلہ۔۔۔الخ، ۹/۶، حدیث: ۶۸۲۵)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू बक्र है, वाज़ेह़ रहे की आप अपने नाम से नहीं बल्कि कुन्यत से मश्हूर हैं, नीज़ आप की इस कुन्यत की इतनी शोहरत है कि अ़वामुन्नास इसे आप का अस्ल नाम समझते हैं ह़ालांकि आप का नाम **अ़ब्दुल्लाह** है। (سیرت حلبیہ، ذکر اول الناس ایمانابہ، ۱/۳۹۰) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो लक़ब ज़ियादा मश्हूर हैं '**अ़तीक़**' और '**सिद्दीक़**' नीज़ अ़तीक़ वोह पहला लक़ब है कि इस्लाम में सब से पहले इस लक़ब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही मुलक़्क़ब किया गया।

(ریاض النضرۃ، الباب الاول، الفصل الثانی فی ذکر اسمہ، ۱/۷۷)

दुन्या में तशरीफ़ आवरी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुल फ़ील के अढ़ाई साल बा'द और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के दो साल और चन्द माह बा'द पैदा हुवे।

(الاصابۃ، ۴/۱۴۵، تاریخ الخلفاء، ص۲۴، نور العرفان، پ۲۶، الاحقاف: ۱۵)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जाए परवरिश मक्कए मुकर्रमा है, आप सिर्फ़ तिजारत की ग़रज़ से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अपनी क़ौम में बड़े मालदार बा मुरव्वत, हुस्ने अख़्लाक़ के मालिक और निहायत ही इ़ज़्ज़त व शरफ़ वाले थे। (اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابو بکر الصدیق، ۳/۳۱۶، تاریخ الخلفاء، ص۲۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर ए'तिबार से अशरफ़ो आ'ला हैं, इमामत हो या ख़िलाफ़त, करामत हो या शराफ़त, सदाक़त हो या शुजाअ़त, अल ग़रज़ किसी भी ए'तिबार से कोई आप का सानी नहीं और आप इतनी बा बरकत और बरगुज़ीदा शख़्सिय्यत हैं कि आप की मुबारक ज़िन्दगी के जिस पहलू पर बात की जाए और आप के फ़ज़ाइले

जमीला और ख़साइसे ह़मीदा पर जितना कहा जाए कम है और वक़्त इस का इह़ाता न कर सके, मगर आज चूंकि हमारे बयान का मौज़ूअ़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा है, लिहाज़ा इस ह़वाले से आप के सामने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा चुनान्चे,

फ़रमाने रसूल के सबब गिर्या व ज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में बैठे थे कि पानी और शहद लाया गया और जैसे ही आप के क़रीब किया गया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया और रोते रहे, यहां तक कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी रोने लग गए, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रो रो के चुप हो गए, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते रहे, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप को देख कर फिर रोने लग गए, यहां तक कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को येह गुमान हुवा कि हमें मा'लूम न हो सकेगा कि क्या बात है ? बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी आंखें साफ़ कीं तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा ! आप को किस चीज़ ने रुलाया ?" फ़रमाया : "एक बार मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बैठा था। अचानक मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ज़ात से कोई शै हटा रहे हैं, ह़ालांकि उस वक़्त मुझे कोई शै नज़र नहीं आ रही थी, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप किस शै को हटा रहे हैं ?" फ़रमाया : "दुन्या ने मेरा इरादा किया था (तो) मैं ने उस से कहा कि "दूर हो जा।" तो उस ने मुझे कहा : "आप ने अपने आप को तो मुझ से बचा लिया, लेकिन आप के बा'द वाले मुझ से नहीं बच पाएंगे।" (شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۳۴۳، حدیث: ۱۰۵۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इतना रोए कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से आप की येह ह़ालत देखी न गई और वोह भी फूट फूट कर रोने लगे, आप सिर्फ़ इस डर से रो रहे थे कि कहीं ऐसा न हो कि मैं दुन्या की मह़ब्बत और इस के दामने फ़रेब में आ कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की कोई ना फ़रमानी कर बैठूं और मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ हो जाए ह़ालांकि आप की शख़्सिय्यत तो वोह है जिन को प्यारे आक़ा, दो आ़लम के मालिको मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या में ही जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई है, लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा छाया हुवा था और आह एक त़रफ़ हम हैं कि कुछ पता नहीं जन्नत में जाएंगे या **مَعَاذَ اللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में, लेकिन फिर भी बे ख़ौफ़ हैं, हमारा नामए आ'माल नेकियों से ख़ाली है, लेकिन इस के बा वुजूद हम नेकियों की जुस्तजू नहीं करते। ऐ काश हमें भी ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए।

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया ऐ मेरे अल्लाह येह क्या हो गया ?
कुछ मेरे बचने की सूरत कीजिये अब तो जो होना था मौला हो गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब भी समाअ़त फ़रमा लीजिये। ख़ौफ़े ख़ुदा से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए।

(ماخوذ من احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ج۴)

ख़ौफ़े ख़ुदा मोअमिनीन की लाज़िमी सिफ़ात में से है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर इस सिफ़त को इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाया है।

चुनान्चे, पारह 5, सूरतुन्निसा, आयत नम्बर 131 में इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ (پ۵، النساء: ۱۳۱)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि **अल्लाह** से डरते रहो।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ (پ۲۲، الاحزاب: ۷۰)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और सीधी बात कहो।

इसी त़रह़ येह भी इरशाद फ़रमाया :

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ (پ۶، المائدۃ: ۳)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन से न डरो और मुझ से डरो।

आइये ! अब प्यारे आक़ा, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से निकलने वाले उन मुक़द्दस कलिमात को भी समाअ़त फ़रमाइये, जिन में आप ने ख़ौफ़े ख़ुदा की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। चुनान्चे,

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ नहीं करूंगा और न उस के लिये दो अम्न जम्अ़ करूंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहे तो मैं क़ियामत के दिन उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरता रहे तो मैं बरोज़े क़ियामत उसे अम्न में रखूंगा।''

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللّٰہ تعالیٰ، ۱/۴۸۳، حدیث: ۷۷۷)

﴾2﴿ सरवरे आ़लम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से आंसू निकलता है, अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हो, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी ह़िस्से तक पहुंचे, **अल्लाह** तआ़ला उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है।''

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللّٰہ تعالیٰ، ۱/۴۹۰، حدیث: ۸۰۲)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मोमिन का दिल **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से लरज़ता है, तो उस की ख़ताएं इस त़रह़ झड़ती हैं, जैसे दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ۱/۴۹۱، حدیث: ۸۰۳)

तेरे डर से सदा थर थराऊं ख़ौफ़ से तेरे आंसू बहाऊं
कैफ़ ऐसा दे, ऐसी अदा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई हमें हर लम्ह़ा ख़ौफ़े ख़ुदा से लर्ज़ां व तर्सां रहना चाहिये। आ़शिक़े अक्बर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी बे पनाह ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे। आइये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़ौफ़े ख़ुदा से भरपूर चन्द जुम्ले सुनिये। चुनान्चे,

काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक बाग़ में दाख़िल हुवे, दरख़्त के साए में एक चिड़या को बैठे हुवे देखा, तो आप ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ परन्दे ! तू कितना ख़ुश नसीब है कि एक दरख़्त से खाता है और दूसरे के नीचे बैठ जाता है, फिर तू बिग़ैर ह़िसाब किताब के अपनी मन्ज़िल पे पहुंच जाएगा। ऐ काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فصل فی تفضیلھم، فضل الصدیق، خوفہ، جزء: ۱۲، ۶/۲۳۷، حدیث: ۳۵۶۹۶، شعب الایمان، باب فی خوف من اللہ، ۱/۴۸۵، حدیث: ۷۸۸)

काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
मैं न फंस गया होता आ के सूरते इन्सां काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता

मोमिने सालेह़ का कोई बाल होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इ़मरान जौनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "काश ! मैं एक मोमिने सालेह़ के पहलू का कोई बाल होता।" (کتاب الزھد، زھد ابی بکر الصدیق، ص ۱۳۸، رقم: ۵۶۰)

तार बन गया होता मुर्शिदी के कुरते का मुर्शिदी के सीने का बाल बन गया होता

काश ! मैं एक दरख़्त होता

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम मैं येह पसन्द करता हूं कि मैं येह दरख़्त होता जिसे खाया और काटा जाता।" (کتاب الزھد، زھد ابی بکر الصدیق، ص ۱۴۱، رقم: ۵۸۱)

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

काश ! मैं सब्ज़ा होता

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मुझे येह ख़बर मिली है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने यूं फ़रमाया : "ऐ काश ! मैं सब्ज़ा होता जिसे जानवर खा जाते।" (جمع الجوامع، مسند ابی بکر الصدیق، ۱۱/۴۱، حدیث: ۱۷۴، طبقات کبری، ذکر وصیۃ ابی بکر، ۳/۱۴۸)

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा या मैं बन के इक तिन्का ही वहां पड़ा होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ौफ़े ख़ुदा पर मुश्तमिल अक़्वाल समाअ़त किये, हमें भी चाहिये कि इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे अपना मुह़ासबा करें कि अब तक हम अपनी ज़िन्दगी की कितनी सांसें ले चुके हैं, इस दुन्याए फ़ानी में अपनी ज़िन्दगी के कितने अय्याम गुज़ार चुके हैं, बचपन, जवानी, बुढ़ापे में से अपनी उ़म्र के कितने मरह़ले तै़ कर चुके हैं ? लेकिन इस दौरान हम ने कितनी मरतबा दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा मह़सूस किया ? क्या कभी हमारे बदन पर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से लर्ज़ा त़ारी हुवा ? क्या कभी हमारी आंखों से ख़शिय्यते इलाही की वजह से आंसू निकले ? क्या कभी किसी गुनाह के लिये उठे हुवे हमारे क़दम इस के नतीजे में मिलने वाली सज़ा का सोच कर वापस हुवे ? क्या कभी हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी और उस की त़रफ़ से की जाने वाली गिरफ़्त के डर से ज़िन्दगी की कोई रात गुज़ारी ? क्या कभी रब तआ़ला की नाराज़ी का सोच कर हमें गुनाहों से वह़शत मह़सूस हुई ? क्या कभी अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को पा लेने की ख़्वाहिश से हमारे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हुई....?

अगर जवाब **''हां''** में हो तो सोचिये कि अगर हम ने इन कैफ़िय्यात को मह़सूस भी किया तो क्या ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अ़मली तक़ाज़ों पर अ़मल पैरा होने की सआ़दत ह़ासिल की ? या महज़ इन कैफ़िय्यात के दिल पर त़ारी होने से मुत़मइन हो गए कि हम **अल्लाह** तआ़ला से डरने वालों में से हैं और मुख़्तलिफ़ गुनाहों से अपना नामए आ'माल सियाह करने का अ़मल ब दस्तूर जारी रखा । और अगर इन सुवालात के जवाबात नफ़ी या'नी **''ना''** में आएं तो ग़ौर कीजिये, कहीं ऐसा तो नहीं कि गुनाहों की कसरत के नतीजे में हमारा दिल पथ्थर की त़रह़ सख़्त हो चुका हो, जिस की वजह से हम इन कैफ़िय्यात से अब तक मह़रूम हों ? अगर वाक़ेई ऐसा है तो मक़ामे तश्वीश है कि हमारी क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) और इस के नतीजे में पैदा होने वाली ग़फ़्लत, नाराज़िये रब्बे क़ह्हार جَلَّ جَلَالُہٗ की सूरत में कहीं हमें जहन्नम की गहराइयों में न गिरा दे । (وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہ)

क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्ती में बढ़ा जाता है दिल पे इक ख़ौल सियाही का चढ़ा जाता है

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब शदीद तक्लीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो ऐसे रक़ीकुल क़ल्ब (या'नी नर्म दिल वाले) थे कि जब आप के सामने तिलावते कुरआन की जाती तो आप पर लर्ज़ा त़ारी हो जाता, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से रिवायत है : फ़रमाते हैं कि मैं दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मौजूद था कि कुरआने पाक की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا یُّجْزَ بِهٖ ۙ وَ لَا یَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیًّا وَّ لَا نَصِیْرًا ﴿۱۲۳﴾ (پ۵، النساء:۱۲۳)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना ह़िमायती पाएगा न मददगार ।

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! क्या मैं तुम्हें वोह आयत न सुनाऊं जो मुझ पर अभी नाज़िल हुई है ? मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येही आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई। जैसे ही मैं ने येह आयते मुबारका सुनी तो (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ के सबब) मुझे ऐसा लगा कि मेरी कमर की हड्डी टूट जाएगी, मैं ने दर्द की वजह से अंगडाई ली तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! (घबराओ नहीं) तुम और तुम्हारे मोअमिनीन दोस्तों को इस का बदला दुन्या में ही दे दिया जाएगा, यहां तक कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ऐसी ह़ालत में मुलाक़ात करोगे कि तुम पर कोई गुनाह नहीं होगा, लेकिन दीगर लोगों के गुनाह जम्अ़ होते रहेंगे यहां तक कि उन को क़ियामत के दिन उन का बदला दिया जाएगा। (ترمذی،کتاب التفسیر،ومن سورۃ النساء،۵/۳۱،حدیث:۳۰۵۰)

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनी बात है कि जो शख़्स जितना ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला होगा, वोह उतना ही ज़ियादा तक़्वा और परहेज़गारी इख़्तियार करने वाला होगा। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का भी येही ह़ाल था कि ख़ौफ़े ख़ुदा के साथ साथ आप बे ह़द मुत्तक़ी व परहेज़गार भी थे।

सिद्दीक़े अक्बर के ज़ोह्दो तक़्वा पर क़ुरआन की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तो वोह मुत्तक़ी हैं, जिन के तक़्वे को ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम बयान फ़रमाता है।

चुनान्चे, पारह 30 सूरतुल्लैल, आयत नम्बर 17 में इरशाद होता है :

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बहुत जल्द इस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।

इस आयते मुबारका में सब से बड़े परहेज़गार से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हैं। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 30, अल लैल, तह़्तुल आयत : 17)

ज़ोह्दो तक़्वा में ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मिस्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يَّنْظُرَ اِلٰى مِثْلِ عِيْسٰى فِى الزُّهْدِ فَلْيَنْظُرْ اِلَيْهِ "या'नी जो ज़ोह्दो तक़्वा में ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मिस्ल किसी को देखना चाहे तो वोह अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को देख ले।"

(الریاض النضرۃ،الباب الاول،الفصل الثانی فی ذکر اسمہ،۱/۸۲)

निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

www.dawateislami.net

अफ़्सोस ! तू ने मुझे हलाक कर दिया

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ **'फ़ैज़ाने सुन्नत'** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 774 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तक़्वा व परहेज़गारी का एक अनोखा वाक़िआ़ कुछ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में दूध लाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पी लिया। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "मैं पहले जब भी कोई चीज़ पेश करता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाते थे, लेकिन इस दूध के मुतअ़ल्लिक़ कोई इस्तिफ़्सार नहीं फ़रमाया ?" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : " येह दूध कैसा है ?" ग़ुलाम ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बीमार पर मन्तर फूंका था, जिस के मुआ़वज़े में आज उस ने येह दूध दिया है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर अपने ह़ल्क़ में उंगली डाली और दूध उगल दिया। इस के बा'द निहायत आ़जिज़ी से दरबारे इलाही में अ़र्ज़ किया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस पर मैं क़ादिर था वोह मैं ने कर दिया। इस का थोड़ा बहुत ह़िस्सा जो रगों में रह गया है वोह मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

(بخاری، مناقب الانصار، ایام الجاھلیۃ، حدیث: ۳۸۴۲، ج ۲، ص ۵۷۱، منھاج العابدین، الفصل الخامس، البطن وحفظہ، ص ۹۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितने ज़बरदस्त मुत्तक़ी थे। चूंकि कुफ़्फ़ार अक्सर कुफ़्रिय्या कलिमात पढ़ कर मरीज़ों पर झाड़ फूंक करते हैं, दौरे जाहिलिय्यत में भी इसी त़रह़ होता था, उस ग़ुलाम ने चूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में दम किया था, लिहाज़ा इस ख़ौफ़ के सबब कि उस ने कुफ़्रिय्या मन्तर पढ़ कर दम किया होगा, इस लिये उस की उजरत का दूध सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ै कर के निकाल दिया।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 774)

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं — ह़क़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं — तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर ख़ुत़बा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये अब हम ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर ख़ुत़बा सुनते हैं ताकि हम पर मज़ीद इ़यां हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितने नेक, मुत्तक़ी और ख़ौफ़े ख़ुदा व फ़िक्रे आख़िरत रखने वाले थे। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 686 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर' के सफ़ह़ा 436 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़क़ैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

ने एक त़वील ख़ुत़बा दिया, ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं तुम्हें परहेज़गारी की वसिय्यत करता हूं और येह भी कि तुम उस ज़ाते बर ह़क़ की ऐसी ह़म्दो सना करो जैसी ह़म्दो सना करने का ह़क़ है और येह कि तुम ख़ौफ़े ख़ुदा के साथ साथ उस की रह़मत पर भी नज़र रखो और रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़ गिड़ा कर मांगो, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इन के ख़ानदान वालों की ता'रीफ़ की है, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝ (پ۱۷، الانبیاء:۹۰)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़ गिड़ाते हैं।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अच्छी त़रह़ समझ लो, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़क़ के बदले तुम्हारी जानों को गिरवी रख लिया है और इस पर तुम से पक्का वा'दा भी ले लिया है और तुम से आख़िरत के बदले दुन्या को ख़रीद लिया है, येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की किताब है, जिस का नूर नहीं बुझता, इस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होते, इस के क़ौल की तस्दीक़ करो और उस की किताब से नसीह़त ह़ासिल करो, तुम उस नूर से तारीक दिन के लिये रोशनी ह़ासिल करो, उस ने तुम्हें अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया है और तुम पर किरामन कातिबीन फ़िरिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा दिया है जो तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर हैं। ऐ ख़ुदा के बन्दो ! ख़ूब जान लो कि तुम सुब्ह़ो शाम मौत की त़रफ़ बढ़ रहे हो, तुम से मौत का इ़ल्म पोशीदा रखा गया है, अगर तुम अपने मुक़र्ररा अवक़ात को रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ कर सकते हो तो ज़रूर करो, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के बिग़ैर तुम हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकते और मौत के आने से क़ब्ल अपने वक़्त को अच्छे कामों में सर्फ़ कर दो, कहीं ऐसा न हो कि येह वक़्त तुम्हें बुरे आ'माल में मसरूफ़ कर दे और कई क़ौमें ऐसी थीं जिन्हों ने अपने क़ीमती वक़्त को ज़ाएअ़ किया और अपने मक़्सद को भूल गईं, लिहाज़ा ऐसे लोगों की पैरवी से बचो, जल्दी करो और नजात पाने की कोशिश करो, यक़ीनन तुम्हारे पीछे बहुत तेज़ रफ़्तार मौत लगी हुई है जो बहुत जल्द आ कर ही रहेगी।

(شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، فصل فیما بلغنا عن الصحابۃ... الخ، حدیث: ۱۰۵۹۴، ۷/۳۶۴، مستدرک، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الانبیاء، حدیث: ۳۴۹۹، ۳/۱۴۰)

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम दीवाना शहनशाहे मदीना का बना दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से पहले कि हमारी सांसों की आमदो रफ़्त रुक जाए और सिवाए अफ़्सोस के हमारे दामन में कुछ भी न हो, हमें चाहिये कि अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये ख़ौफ़े ख़ुदा जैसी सिफ़ते अ़ज़ीमा को अपनाने की जिद्दो जोह्द में लग जाएं, क्यूंकि अगर हम अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने में कामयाब हो गए, तो इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से भी छुटकारा नसीब होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा भी नसीब होगी, ख़ौफ़े ख़ुदा की इस अ़ज़ीम ने'मत के ह़ुसूल के लिये अ़मली कोशिश के सिलसिले में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ 6 उमूर मददगार साबित होंगे। आइये इन्तिहाई तवज्जोह के साथ सुनिये।

ख़ौफ़े ख़ुदा के हुसूल के लिये 6 मददगार उमूर

1. रब तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा और इस ने'मत के हुसूल की दुआ़ करना।
2. कुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे मुबारका में वारिद होने वाले ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखना।
3. अपनी कमज़ोरी व ना तुवानी को सामने रख कर जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो तफ़क्कुर करना।
4. ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बारे में **अल्लाह** वालों के ह़ालात का मुत़ालआ़ करना।
5. अपने आ'माल के मुह़ासबे की आ़दत बनाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करना।
6. ऐसे इस्लामी भाइयों की सोह़बत इख़्तियार करना, जो इस सिफ़ते अ़ज़ीमा से मुत्तसिफ़ हों।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले नेक इस्लामी भाइयों की सोह़बत में बैठना भी इन्सान के दिल में ख़ौफ़े इलाही बेदार करने में मददगार साबित होता है, क्यूंकि इन्सान जिस क़िस्म की सोह़बत इख़्तियार करता है, उसी क़िस्म के असरात उस पर मुरत्तब होते हैं। चुनान्चे,

नबिय्ये ज़ीशान, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रफ़ इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : अच्छे और बुरे मसाह़िब (साथी) की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़्फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी। (صحیح المسلم،،ص۱۱۱۶،رقم الحدیث۲۶۲۸)

सोह़बत या माह़ोल इन्सान पर कैसे असर अन्दाज़ होता है इस को यूं समझें कि अगर हमें कभी किसी मय्यित वाले घर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो वहां की फ़ज़ा पर छाई हुई उदासी देख कर कुछ देर के लिये हम भी **ग़मगीं** हो जाएंगे और अगर किसी शादी पर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो ख़ुशियों भरा माह़ोल हमें भी कुछ देर के लिये **मसरूर** कर देगा। बिल्कुल इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स ग़फ़्लत का शिकार हो कर गुनाहों पर दिलेर हो जाने वाले लोगों की सोह़बत में बैठेगा, तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही की मानिन्द हो जाएगा और अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा, जिन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मा'मूर हों, उन की आंखें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से रोएं, तो यक़ीनी त़ौर पर येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत कर जाएंगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ। रहा येह सुवाल कि फ़ी ज़माना ऐसी सोह़बतें कहां मिल सकती हैं ? तो आप से मदनी इल्तिजा है कि इस सुवाल का जवाब ह़ासिल करने के लिये आप चन्द मदनी फूल अपने दिल के मदनी गलदस्ते में सजा लीजिये :

अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करें। जहां तिलावते कुरआन, ना'ते रसूले मक़्बूल, सुन्नतों भरे बयानात, ज़िक्रुल्लाह, रो रो कर मांगी जाने वाली दुआ़एं, सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया जाने वाला दुरूदो सलाम, फिर सुन्नतें व आदाब सीखने और दुआ़एं याद करवाने के ह़ल्क़े वग़ैरा, येह सब कुछ हमारे दिलो दिमाग़ में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर देगा,

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ । इस के इलावा सुन्नतों भरे हफ़्तावार इजतिमाअ़ में आप को इस पुर फ़ितन दौर में भी, कसीर आ़शिक़ाने रसूल ऐसे मिलेंगे जो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर होंगे । इन की ह़या से झुकी हुई निगाहें, सुन्नत के मुत़ाबिक़ बदन पर सफ़ेद लिबास और सर पर ज़ुल्फ़ें नीज़ गुम्बदे ख़ज़रा की यादों से माला माल सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा, चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी, ब क़दरे ज़रूरत गुफ़्त्गू का बा अदब अन्दाज़, ख़ुश अख़्लाक़ी का नुमायां वस्फ़ और किरदार की पाकीज़गी आप को येह सोचने पर मजबूर कर देगी कि मुझे सफ़रे आख़िरत की कामयाबी के लिये ऐसा ही मदनी माह़ोल दरकार है । ऐन मुमकिन है कि इन्हीं में से कोई इस्लामी भाई आगे बढ़ कर आप से मुलाक़ात करे, जिस के नतीजे में आप दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की इफ़ादिय्यत के मज़ीद क़ाइल हो जाएं और आप भी येह मदनी मक़्सद ले कर घर लौटें कि

''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़िन्दगी के सदक़े में ह़क़ीक़ी ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही !
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने ख़लीफ़ए अव्वल, सिद्दीक़े अक्बर, यारे ग़ार व यारे मज़ार, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते मुबारका में येह सुना कि आप ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स रोया करते । आप ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स चिड़या को देख कर फ़रमाया करते : काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता, कभी ख़ौफ़े ख़ुदा की बिना पर यूं फरमाते : काश ! मैं मोमिन का बाल होता, कभी ख़ौफ़े ख़ुदा की बिना पर यूं फ़रमाते : काश ! मैं दरख़्त होता, ख़ौफ़े ख़ुदा की बिना पर आप ने पिये हुवे दूध की क़ै कर दी, काश ! सिद्दीक़े अक्बर के सदक़े में हमें भी सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए, काश ! सिद्दीक़े अक्बर के सदक़े में अपनी कमज़ोरी और ना तुवानी का एह़सास हो जाए, जहन्नम के अ़ज़ाबात का तसव्वुर क़ाइम हो जाए, काश ! हम अपने आ'माल का रोज़ाना मुह़ासबा करने वाले हो जाएं । اٰمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बनाम **'ख़ौफ़े ख़ुदा'** का मुत़ालआ़ कीजिये । ख़ौफ़े ख़ुदा के मौज़ूअ़ पर येह बहुत ही बेहतरीन किताब है जिस में ख़ौफ़े ख़ुदा के फ़ज़ाइल, इसे ह़ासिल करने के त़रीक़े और इस मौज़ूअ़ पर बुज़ुर्गाने दीन के ढेरों अक़्वाल और वाक़िआ़त को जम्अ़ किया गया है । आप भी इस किताब को हदिय्यतन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि अपने अ़ज़ीज़ों को तोह़फ़े के त़ौर पर पेश करें । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस को पढ़ने से ख़ौफ़े ख़ुदा और तक़्वा व परहेज़गारी का अनमोल ख़ज़ाना

www.dawateislami.net

हाथ आएगा। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत का एक पहलू आप का बे पनाह इ़श्क़े रसूल भी है। आप के इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला **'आ़शिक़े अक्बर'** बे ह़द मुफ़ीद है, जिस में सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मह़ब्बते रसूल की ख़ातिर अपना तन मन धन क़ुरबान करने के अह़वाल पढ़ कर आप की आंखें नम हो जाएंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की दौलत से माला माल फ़रमाए। اٰمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दौलत पाने का एक त़रीक़ा आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी है। मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान हमें अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इर्तिकाब पर नदामत मह़सूस होगी, गुनाहों पर मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रौंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी ना तुवानी व बे कसी का एह़सास दामन गीर होगा और अगर दिल ज़िन्दा हुवा तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगेंगे, इन मदनी क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदो सलाम जारी हो जाएगा और येह ज़बान तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, दुन्या की मह़ब्बत में डूबा हुवा दिल आख़िरत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, नीज़ वक़्त की दौलत को मह़ज़ दुन्या कमाने के लिये सर्फ़ करने के बजाए अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये ख़िदमते दीन में सर्फ़ करने का शुऊ़र नसीब होगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन मदनी क़ाफ़िलों ने बे शुमार नौ जवानों की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा किया है। आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

बिगड़ा नौ जवान कैसे सुधरा ?

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े मह़मूदाबाद (चनसीर गोठ) के मुक़ीम इस्लामी भाई अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब होने के अह़वाल कुछ इस त़रह़ बयान करते हैं : बद क़िस्मती से मुझे बचपन ही में बुरे दोस्तों का साथ मिल गया **'बुरे की सोह़बत इन्सान को बुरा बना देती है'** के मिस्दाक़ मैं भी मुख़्तलिफ़ बुराइयों का शिकार हो गया। स्कूल से भाग जाना, चोरी चकारी, मार पिटाई, लड़ाई झगड़े करना मेरे मा'मूलाते ज़िन्दगी का ह़िस्सा थे। गुनाहों का येह सिलसिला बढ़ता गया और आख़िरे कार मैं ने अपने दोस्तों समेत मनशिय्यात फ़रोशों के गुरौह में शुमूलिय्यत इख़्तियार कर ली। वालिदैन मुझे समझाते मगर मेरे नज़दीक उन की बातों की कोई अहम्मिय्यत न थी। वालिदैन मेरे इस रविय्ये से पहले ही परेशान थे कि एक दिन मैं ने एक जगह शादी का मुत़ालबा कर दिया। घर वालों ने येह जान कर कि शायद सुधर जाए मेरी पसन्द की शादी करवा दी, मगर मैं भला

कहां सुधरने वाला था। अब तो एक क़दम और आगे बढ़ा और चरस व शराब नोशी के साथ साथ डकेतियां मारना शुरूअ़ कर दीं। वालिदैन की नाफ़रमानी और उन्हें सताना तो मेरे लिये कोई नया काम न था। मां बाप मुझे मुसलसल समझाते, जब कभी बुरे दोस्तों को छोड़ने का कहते तो मैं अपने वालिदैन को छोड़ कर दोस्तों के पास डेरा डाल लेता और हफ़्ता हफ़्ता घर का रुख़ न करता। दिन ब दिन मेरे गुनाहों का सिलसिला बढ़ता गया, अब मैं नाजाइज़ अस्लिहा लिये अकड़ता फिरता, बदकारी कर के 'काला मुंह' करता। पहले क्या गुनाह कम थे जो अब चरस, शराब के साथ पावडर पीना, नींद आवर गोलियां खाना भी शुरूअ़ कर दीं। घर वाले समझाने की कोशिश करते तो 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' के मिस्दाक़ उन से लड़ना शुरूअ़ कर देता, नाराज़ हो जाता। रिश्तेदार, गली महल्ले वाले अल ग़रज़ हर एक मेरी हरकतों के बाइस मुझ से बेज़ार था। कई बार वालिद साहिब ने डन्डों से मारा भी मगर मेरे कान पर जूं तक न रैंगती। मेरी वालिदा मुझ से ऐसी तंग आ चुकी थी कि बारहा कहती : काश तू पैदा न हुवा होता। कोई कहता : काश तुझे मौत आ जाए ताकि हमें सुख का सांस नसीब हो। शादी के नव (9) साल बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बेटी की ने'मत अ़ता फ़रमाई, वालिदैन को एक आस लगी कि शायद अब सुधर जाए कि बेटी की विलादत से बड़े बड़े सुधर जाते हैं, मगर जब मेरे मुआ़मलात में कोई फ़र्क़ न आया तो उन की वोह आस भी यास में बदल गई। फिर छे (6) साल बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बेटा अ़ता फ़रमाया, मगर मैं फिर भी अपनी पुरानी रविश पर क़ाइम रहा।

बिल आख़िर मेरे सुधरने की सबील यूं बनी कि बुड्ढे वालिदैन की मिन्नत-समाजत और एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की मुसलसल इनफ़िरादी कोशिश के सबब दा'वते इस्लामी के राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हासिल हो गई। मदनी क़ाफ़िले में तो क्या सफ़र किया मेरी क़िस्मत ही संवर गई। मेरी ख़ुश क़िस्मती कि अमीरे क़ाफ़िला मुझे अच्छी त़रह़ जानते थे, उन्हों ने मुझे बहुत समझाया, कभी अह़ादीस सुना कर मुझे मेरी ग़लतियों का एह़सास दिलाते, वालिदैन का मक़ाम व मर्तबा बताते तो कभी मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त बता कर नेकियों के मुतअ़ल्लिक़ मेरी हिम्मत बन्धाते। ज़िन्दगी में पहली बार मुझे अपनी ग़लतियों का एह़सास हुवा, वालिदैन के साथ की हुई ज़ियादतियों पर आज मैं शर्म से पानी पानी हुवा जा रहा था। गुनाहों की हौलनाक सज़ाएं सुन कर मैं ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली और अपनी इस्लाह़ की पुख़्ता निय्यत भी कर ली। दौराने मदनी क़ाफ़िला ही घर वालों से राबित़ा किया, वालिदैन से मुआ़फ़ी मांगी और वा'दा किया कि आयिन्दा सारे बुरे काम छोड़ दूंगा। घर वापस आते ही सब से मुआ़फ़ी मांगी, बिल ख़ुसूस वालिदैन के क़दमों में गिर कर उन्हें राज़ी किया। रफ़्ता रफ़्ता दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुकम्मल त़ौर पर वाबस्ता हो गया। सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया। अब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे वालिदैन मुझ से बहुत ख़ुश हैं और दा'वते इस्लामी के एह़सान मन्द हैं कि जिस की बरकत से मैं गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी की त़रफ़ माइल हुवा। ता दमे तह़रीर मदनी तर्बिय्यती कोर्स की सआ़दत हासिल कर रहा हूं। मेरी दुआ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मरते दम तक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मजलिसे मदनी मुज़ाकरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से दा'वते इस्लामी दिन ब दिन तरक़्क़ी की मनाज़िल तै करती जा रही है और इस के शो'बा जात और मजालिस में भी इज़ाफ़ा होता जा रहा है। दा'वते इस्लामी के शो'बा जात में से एक शो'बा '**मजलिसे मदनी मुज़ाकरा**' भी है।

कहा जाता है कि "इल्म बे शुमार ख़ज़ानों का मजमूआ है, जिन के हुसूल का ज़रीआ सुवाल है।" शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस क़ौल को अ़मली जामा पहनाते हुवे तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी मक़्सद की तक्मील के लिये सुवाल जवाब का एक सिलसिला शुरूअ़ किया, जिसे तन्ज़ीमी इस्ति़लाह़ में '**मदनी मुज़ाकरा**' कहा जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए़ कुछ ही अ़र्से में बे शुमार मुसलमानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है। आप की सोह़बते बा बरकत से फ़ाइदा उठाते हुवे कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मआ़शी व मुआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ व इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिल चस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से लबरैज़ इरशादाते आ़लिय्या के मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त 'मजलिसे मदनी मुज़ाकरा' इन मदनी मुज़ाकरों को तह़रीरी ऑडियो और वीडियो गुलदस्तों की सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब तक मजलिसे मदनी मुज़ाकरा कमो बेश 319 ऑडियो केसिटें और वीडियो सीडीज़ और 5 तह़रीर मदनी मुज़ाकरे पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर चुकी है और मज़ीद कोशिशें जारी हैं। इन मदनी मुज़ाकरों को सुनने से अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ न सिर्फ़ शरई, त़िब्बी, तारीख़ी और तन्ज़ीमी मा'लूमात का ला जवाब ख़ज़ाना हाथ आता है बल्कि मज़ीद हुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होता है।

बारह (12) मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाले इस्लामी भाई दीगर मदनी कामों के साथ साथ ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेते हैं, ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक काम 'हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा' भी है। मदनी मुज़ाकरा कोई नई चीज़ नहीं बल्कि ऐ़न कुरआने पाक की ता'लीमात और मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ है, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۵)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी मुज़ाकरे में भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी सोह़बत में बैठने वाले और मदनी चैनल के नाज़िरीन की इस्लाह़ के साथ साथ उन की तर्बिय्यत करते नीज़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़तो त़रीक़त, फ़िक़्ह व तिब्ब, तारीख़ व आसार, अवरादो वज़ाइफ़, घरेलू व मुआ़शरती मसाइल नीज़ तन्ज़ीमी मुश्किलात से मुतअ़ल्लिक़ पूछे गए सुवालात के जवाबात भी इरशाद फ़रमाते हैं : यूं देखा जाए तो मदनी मुज़ाकरा बड़ी प्यारी ने'मत है कि इस के ज़रीए़ हमें एक वलिय्ये कामिल की बा बरकत सोह़बत नसीब होती है, नीज़ इ़ल्म की राह में सफ़र करने, इ़ल्मे दीन की मह़फ़िल में शिर्कत करने और मस्जिद में वक़्त गुज़ारने की वजह से अज्रो सवाब का ख़ज़ाना भी हाथ आता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث:۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

आइये ! **'काश जन्नतुल बक़ीअ़ मिले'** के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सोने-जागने के 15 मदनी फूल समाअ़त कीजिये।

सोने-जागने के 15 मदनी फूल

﴾1﴿ सोने से पहले बिस्तर को अच्छी त़रह़ झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए ﴾2﴿ सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى **तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) (بُخارِی ج۴ ص۱۹۶ حدیث۶۳۲۵) ﴾3﴿ अ़स्र के बा'द न सोएं कि अ़क़्ल ज़ाइल होने का ख़ौफ़ है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे।" (مسند ابی یعلی حدیث۴۸۹۷ ج۴ ص۲۷۸) ﴾4﴿ दो पहर को क़ैलूला (या'नी कुछ देर लैटना) मुस्तह़ब है।

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी या मुत़ालए में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुई क़ैलूला से दफ़्अ़ हो जाएगी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 79 मक्तबतुल मदीना) ﴾5﴿ दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इशा के दरमियान में सोना मकरूह है । (عالمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) ﴾6﴿ सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और ﴾7﴿ कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर ﴾8﴿ सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा ﴾9﴿ सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो तहलील (या'नी لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله) व तस्बीह़ (या'नी سُبْحٰنَ الله) व तह़मीद (या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰه) का विर्द करता रहे यहां तक कि सो जाए, कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा (ऐज़न) ﴾10﴿ जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَا تَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ (بخاری ج۴ص۱۹۶ حدیث ۶۳۲۵) **तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ﴾11﴿ उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं । (فتاوٰی عالمگیری ج ۵ ص ۳۷۶) ﴾12﴿ जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए । (دُرِّمختار، رَدُّالْمحتار ج ۹ ص ۶۲۹) ﴾13﴿ मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शहवत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है । (دُرِّمختار ج۹ص۶۳۰) ﴾14﴿ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ﴾15﴿ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआ़दत है । सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है ।'' (صَحِیح مُسلِم، ص ۵۹۱ حدیث ۱۱۶۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, '**बहारे शरीअ़त**' ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब '**सुन्नतें और आदाब**' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो

इ़ल्म ह़ासिल करो जहल ज़ाइल करो पाओगे रिफ़अ़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर **शबे जुमुआ़** (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत करेगा** और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **उसे क़ब्र में अपने रहमत भरे हाथों से उतार रहे हैं !**

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे । (اَیضاً ص ٦٥)

(3) रहमत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रहमत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां : جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللهِ

हज़रते अहमद सावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

(6) क़ुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)